ISSN : 2583-2948

संपादकीय

पत्रकारिता वह सशक्त माध्यम है जो समाज व जीवन के सभी वैविध्य, नित्य के नव्यताओं, दैनिक घटनावालियों और प्रसंगावलियों को शीघ्रता से प्रस्तुत करने की अतुल क्षमता रखता है। सूक्ष्म अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होगा कि किसी भी भाषा का साहित्यकार प्रथमत: पत्रकार ही होता है या फिर साहित्य का प्राध्यापक। विशेषत: पत्रकार होता है उसके बाद अन्य क्षेत्र में सफलता अर्जित किये चलता है। इस प्रकार पत्रकार और साहित्यकार दोनों ही लेखक और सर्जक भी होते हैं। दोनों की मूल चेतना भूमि अधिकांशत: समान होती है। सकारात्मक ढंग से ये आम व्यक्ति की संवेदना और आलोचनात्मक विवेक का विकास करते हैं। मनुष्य को यथार्थ से अवगत कराने तथा स्वाधीन और लोकतान्त्रिक बनाने में इनकी भूमिका अद्वितीय होती है। समाज की गतिविधियों का नीर – क्षीर विवेक से मूल्यांकन करके, परिवेश से जनता का साक्षात्कार कराके, सहज सम्प्रेषण के माध्यम से पत्रकारिता जागरूक प्रहरी बनकर कुशल चिकित्सक की भांति मानवीय गुणों के विकास में महान लक्ष्य प्राप्त करती है। देश भर में समाज की गतिविधियों और विसंगतियों से परिचित होने के लिए इनका ही सहयोग जनता और पाठक को लेना पड़ता है। अपने – अपने ढंग से हर प्रकार से रोचकता सहित एक सही दिशा प्रदत्त करने हेतु निष्ठा के साथ तत्पर रहता है बावजूद इस निष्ठा के कहीं – कहीं इसे खुद प्रश्नों के घेरे में खड़ा होना पड़ता है कि आज की पत्रकारिता या मीडिया गोदी मीडिया है। अब संदर्भ यह उठता है कि समाज में सच्चाई के पक्षधर होकर कार्य करने वाली मीडिया अथवा पत्रकारिता अगर गोदी होती भी है तो उसे बनाने वाले कौन हैं? सस्ती लोकप्रियता की चाह रखने वाले लोग छोटा से छोटा और बड़ा से बड़ा कार्य मीडिया की उपस्थिती में करना चाहते हैं। मन के अनुरूप फोटो छपी, या प्रेस को दी गई सामग्री प्रकाशित हुई तो दिन में सौ बार देखते और अन्य को भी उसे दिखाते, फूले नहीं समाते परंतु तनिक भी कुछ गड़बड़ी हुई तब काषाय मन से कोसते भी नहीं अघाते। आवश्यकता है नूतन दृष्टिकोण की, परिवर्तन की, जज़्बे की, कुछ बहुत अलग कर गुजरने की और मौलिकता की। जब भी हम इनमें से किसी भी ओर शुभता की भावना रखते हुए एक कदम आगे बढ़ाएँगे अवश्य ही कुछ लोग हमारे साथ जुड़ जाएंगे और बिन बुलाये शायद मीडिया भी हमें कवर करने के लिए आतुर रहेगी। आज लक्ष्यहीन, दिशाहीन, दायित्वहीन रेस में सब दौड़ लगाते जा रहे हैं परंतु बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो कि रेस का हिस्सा न बनकर एक अलग ही मार्ग को अपनाते हैं और यही लोग प्रेरणा बनते हैं। अभिप्राय यह है कि कर्म और लक्ष्य दोनों ऊंचा रखना चाहिए और लोगों के पीछे नहीं अपने सद्कर्म से लोगों को अपने पीछे बुलाने का हौसला रखने वाले ही युगपुरुष बनते हैं और पत्रिका, अखबार और मीडिया की शान बनते हैं।

'अनुकर्ष' के तीसरे वर्ष, प्रथम अंक में विदेश में कार्यरत भारतीय मूल की तीन विद्वत कवयित्रियां – 'इला प्रसाद', 'नीलू गुप्ता' और 'आरती लोकेश' की कवितायें संकलित हैं जो जीवन की चाह के साथ स्त्री की अस्मिता को तलाशने वाली हैं। अपर आयुक्त अधिकारी असलम हसन जी और प्रो॰ सदानंद भोसले जी की कविता अवश्य ही पाठकों की चेतना को गहरे तक संवेदित करेगी ऐसा मेरा विश्वास है। डॉ एस कृष्ण बाबु, डॉ महेश चौरसिया, डॉ पारुल सिंह समेत सभी आलोचनात्मक लेख शोध, के नव्य अन्वेषण हैं जो शोधार्थियों और अध्येताओं के लिए उपयोगी हैं। गीता चौबे व दिलीप कुमार का व्यंग्य लेख तल्खी के साथ सुधार के नूतन द्वार को खोलने वाले हैं। सुशीला जोशी जी का आध्यात्मिक लेख सात्विक भाव जगाने वाला है तथा आसीत कुमार मिश्र जी की समीक्षा एक नई पुस्तक से पाठकों को परिचित करने में सहायक है।

पत्रिका के इस अंक हेतु लेखकीय सहयोग देने के लिए सभी लेखकों, कवियों और समीक्षकों का आभार व्यक्त करती हूं इस अपेक्षा के साथ कि निकट भविष्य में भी उनका सान्निध्य प्राप्त होगा। पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी